विचार बिन्दु

अवसर तो सभी को ज़िंदगी में मिलते हैं किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीक़े से इस्तेमाल कितने कर पाते हैं? –संतोष गोयल

स्मार्टफोन का उपयोग : बच्चों के मानसिक विकास पर विपरीत प्रभाव

स्मार्टफोन क्रांति ने जहां प्रगति और विकास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किये है वहां इसके दुष्परिणामों से भी दो-दो हाथ करने पड रहे है। विशेषकर पढने वाले बच्चे स्मार्टफोन लवर हो गए हैं। दुनियाभर में स्मार्टफोन के बच्चों पर पड रहे दुष्प्रभावों पर बहस तेज हो रही है। भारत की बात करें तो 10 से 14 वर्ष की आयु सीमा के 83 प्रतिशत बच्चे स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे है। कोरोना के बाद यह संख्या तेजी से बढ्ढी है। एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक यह वैश्विक औसत 76 प्रतिशत से 7 प्रतिशत अधिक है। बच्चों के बहुतायत से स्मार्टफोन के उपयोग पर कई देशों ने रोक लगा दी है। कई देशों की स्कूलों में भी प्रतिबंद लगाए गए है। बताया जाता है स्मार्टफोन के उपयोग से बच्चों में 150 प्रतिशत तनाव बढने का खुलासा हुआ है।

चाइल्ड राइड की टॉप संस्था नेशनल कमीशन फॉर प्रोटेक्शन फॉर चाइल्ड राइट की रिपोर्ट से एक चौकाने वाला खुलासा हुआ है कि करीब 10.1 फीसदी बच्चे ही स्मार्टफोन के इस्तेमाल से ऑनलाइन पढाई करते हैं। बाकी 59.2 फीसदी बच्चे स्मार्टफोन का इस्तेमाल ऑनलाइन चैटिंग और अन्य कामों में इस्तेमाल करते हैं। मतलब हर 7 में से 6 बच्चे स्मार्टफोन का इस्तेमाल पढाई नहीं, बल्कि सोशल मीडिया चलाने के लिए करते हैं। जबकि केवल 7 में से 1 ही बच्चा स्मार्टफोन के इस्तेमाल से ऑनलाइन पढाई करता है। रिपोर्ट में पाया गया है कि माता-पिता और अभिभावक बच्चों को 12 से 13 वर्ष की आयु में लैपटॉप और टैबलेट की जगह स्मार्टफोन ज्यादा दिलाते हैं। रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि करीब 72.70 फीसदी अध्यापकों को इससे पहले स्मार्टफोन के इस्तेमाल का एक्सपीरिएंस नहीं था। इनमें से करीब 54.1 फीसदी का मानना है कि स्मार्टफोन के क्लासरूम में इस्तेमाल से ध्यान भटकता है।

एक शैक्षिक रिपोर्ट के मुताबिक स्मार्टफोन से बचपन और शैक्षिक जीवन इंटरनेट के जंगल में गुम हो रहा है। पिछले कई सालों से सूचना तकनीक ने जिस तरह से तरक्की की है उसने छात्रों की जीवनशैली को ही बदल डाला है। बच्चे और युवा एक पल भी स्मार्टफोन से खुद को अलग रखना गंवारा नहीं समझते। इनमें हर समय एक तरह का नशा सा सवार रहता है। मौजूदा दौर में बच्चों में खेलकूद और पढाई का स्थान स्मार्टफोन ने ले लिया है। इसका सीधा प्रभाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर पड्ा है। शहरों के साथ अब गांवों में भी मोबाइल की पहुँच होने से बच्चों में इंटरनेट की लत बढ्ढ गई है। इससे उनमें संवादहीनता का खतरा बढ्ढ रहा है। बच्चे के ऐसे व्यवहार को अनदेखा करने की जगह इस पर सजग और सावधान होने की जरूरत है।

ब्रिटेन और इटली यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन पर विश्वास करे तो पाएंगे इंटरनेट का ज्यादा इस्तेमाल करने वाले स्टूडेंट पढाई से तालमेल नहीं बैठा पाने के कारण पिछडते जा रहे है। ऐसे छात्र अकेले रहना पसंद करते है जिससे उनका भविष्य खतरे में पढ गया है। अपने बच्चों को मोबाइल और कंप्यूटर पर गेम खेलते अनेक माता-पिता बहुत खुश होते हैं। वे दूसरों को बडे गर्व के साथ यह बताते तनिक भी नहीं हिचकते की उनका बेटा डिजिटल दुनियां के नए जमाने के साथ दौड़ रहा है। वे बडे खुशी से बताते हैं कि वह मोबाइल पर फोटो निकाल लेता है। मैसेज भेज देता है। व्हाट्सप पर बात कर लेता है और फोटो, वीडियो शेयर कर लेता है। यहाँ तक कि गूगल पर कुछ भी खोज लेता है। लेकिन शायद वह इस बात से अनजान है कि जिसे वह बच्चे की स्मार्टनेस समझ रहे हैं वह उसके विकास में बाधा भी बन सकता है। विशेषज्ञ मानते है कि इलेक्ट्रॉनिक गजेट और कंप्यूटर का अत्यधिक प्रयोग बच्चों के लिए अच्छा नहीं है। इससे उनमें संवादहीनता और चिडचिडेपन की प्रवृत्ति बढ्ढती है।

पिछले कई सालों से सूचना तकनीक ने जिस तरह से तरक्की की है उसने छात्रों की जीवनशैली को ही बदल डाला है। बच्चे और युवा एक पल भी स्मार्टफोन से खुद को अलग रखना गंवारा नहीं समझते। इनमें हर समय एक तरह का नशा सा सवार रहता है। मौजूदा दौर में बच्चों में खेलकूद और पढाई का स्थान स्मार्टफोन ने ले लिया है। इसका सीधा प्रभाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर पड़ा है। शहरों के साथ अब गांवों में भी मोबाइल की पहुँच होने से बच्चों में इंटरनेट की लत बढ़ गई है। इससे उनमें संवादहीनता का खतरा बढ़ रहा है। बच्चे के ऐसे व्यवहार को अनदेखा करने की जगह इस पर सजग और सावधान होने की जरूरत है।

ब्रिटेन और इटली की यूनिवर्सिटी के संयुक्त अध्ययन में पाया गया कि जो छात्र डिजिटल तकनीक का अधिकतम उपयोग करते हैं, वे पढाई के साथ पूरी तरह नहीं जुड पाते और फिसड्डी साबित होते हैं। ज्यादा इंटरनेट के इस्तेमाल से उन्हें अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता और उनमें अकेलेपन की भावना घर कर जाती है।

ब्रिटेन की स्वानसी और इटली की मिलान यूनिवर्सिटी ने संयुक्त अध्ययन में डिग्री कोर्स में सेहत संबंधी अध्ययन के लिए दुनियाभर की 285 यूनिवर्सिटी के छात्रों से उनके डिजिटल उपयोग, पढाई और रिजल्ट के बारे में जानकारी ली गई थी। अध्ययन में 25 प्रतिशत छात्रों ने बताया कि उन्होंने दिनभर में 4 घंटे ऑनलाइन बिताए जबकि 70 प्रतिशत ने एक से तीन घंटे तक इंटरनेट का इस्तेमाल किया। इनमें 40 प्रतिशत छात्रों ने सोशल नेटवर्किंग का इस्तेमाल किया जबकि 30 प्रतिशत ने सूचना के लिए इसका इस्तेमाल किया। वहीं एक अन्य रिपोर्ट में बताया गया गया है इंटरनेट की लत से छात्र अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने से कतराने लगते हैं और अपने घर के बाहर की दुनिया में रुचि लेना छोड देते हैं। इससे उनका शैक्षिक वातावरण भी प्रभावित होता है।

एक अभिभावक का कहना है उसका बेटा स्कूल से आते ही स्मार्टफोन थाम लेता है, कई आवाज लगाने पर भी हिलता तक नहीं। बाहर घूमने की जगह उनका बेटा स्मार्टफोन पर व्यस्त रहता है, लेकिन अब उसके व्यवहार पर चिंता होने लगी है। वह किसी से बात करना तक पसंद नहीं करता, ज्यादा कुछ बोलों तो चिढ जाता है या चिल्लाकर जवाब देता है। एक दूसरा अभिभावक अपनी बेटी के व्यवहार से चिंतित है। वह कहती हैं कि अभी आठवीं कक्षा में ही है, लेकिन उसके अंदर इस उम्र के बच्चों सी चपलता और चंचलता नहीं है। काफी कम बोलती है। इंटरनेट सर्फिंग में उसका खाली समय बीतता है।

देश में इंटरनेट के तेजी से बढ्ढते इस्तेमाल में बचपन खोता जा रहा है जिसकी परवाह न सरकार को है और न ही समाज इससे चिंतित है। ऐसा लगता है जैसे गैर जरुरी मुद्दे हम पर हावी होते जा रहे है और वास्तविक समस्याओं से हम अपना मुंह मोड रहे है। यदि यह यूँ ही चलता रहा तो हम बचपन को बर्बादी की कगार पर पहुंचा देंगे। अभिभावकों को अपनी इस लापरवाही और बच्चों के प्रति उदासीनता का खामियाजा भी भुगतने को तैयार होना पड़ेगा क्योंकि इंटरनेट ज्ञान के साथ अश्लील सामग्री भी परोसता है जिसका बाल और युवा मन पर विपरीत असर पड्ता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम नए जमाने को अपनाने के साथ उसकी बुराइयों पर भी निगाह रखे ताकि बचपन को गुमराह होने से बचाया जा सके। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया या वीडियो गेम बच्चों को मैग्नेट की तरह अपनी ओर खींचते हैं। एक बार ये बच्चों के हाथ में गए तो उन्हें इससे दूर करना इम्पॉसिबल हो सकता है। बच्चों का दिमाग उतना डेवलप नहीं हुआ होता है कि वो उस मैग्निटिक खिंचाव से खुद को बचा सकें। इसलिए बच्चों को स्मार्टफोन देने में जितनी देरी कर सकें, करें और अगर देना ही पड्े तो पेरेंटल कंट्रोल लगाकर दें।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुंद ओझा
वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

लोक चितरामों में श्रीराम

श्रीराम भारतीय जनमानस के मूल भाव में रहे हैं और इसी का ही परिणाम है कि आम जीवन और संस्कारों के साथ-साथ अन्य विभिन्न आयाम यथा कला, साहित्य, जो कि सभ्यता को दिशा और पोषण देते हैं, में श्रीराम का सशक्त निरूपण हुआ है। यहाँ श्रीराम केवल धर्म, समुदाय या संप्रदाय के प्रतिनिधि न होकर संस्कार और संस्कृति के पर्याय हैं। भारत ही नहीं बल्कि थाईलैंड, सूरीनाम और मॉरिशस सरीखे देशों में भी श्रीराम का जीवन और आदर्श लोक व्यापक है, प्रासंगिक है और समादृत है।

संस्कृत साहित्य की अनुपम कृतियों रघुवंश, प्रसन्न राघव और उत्तर रामचरित में रामकथा का सुन्दर उल्लेख मिलता है। साहित्य के साथ-साथ ललित कलाओं विशेषकर चित्रकला में भी रामायण, श्रीरामचरितमानस और अन्य कृतियों में उल्लेखित रामकथा के प्रसंगों का चित्रण हुआ है। रामायण और रामकथा के प्रसंग लोक चित्रों से लेकर मंदिरों, महलों, हवेलियों के भित्ति-चित्रों, विभिन्न लघुचित्रण शैलियों यथा राजपूत, कांगड़ा, बसौली आदि से लेकर समसामायिक और आधुनिक चित्रकारों के कला-कर्म में मुखरित होते हैं। लोक चित्रांकन परंपरा में श्रीराम जन-व्यापक होकर, मानवीय मूल्यों के सशक्त संवाहक के रूप में उद्घाटित होते हैं। 7वीं और 12वीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में प्रारम्भ हुआ, भक्ति आंदोलन 15वीं शताब्दी तक उत्तर भारत तक पहुंचा।

भक्ति द्रविड़ उपजी लाये रामानन्द,
प्रकट किया कबीर ने, सात दीप नौ खंड

भक्ति के इस प्रचार-प्रसार में चित्रित स्क्रॉल्स का महत्वपूर्ण प्रयोग रहा, जिसमें मुख्य रूप से हरिकथा के तमिल और तेलुगु परंपराओं को निरुपित करते चित्रित स्क्रॉल्स को मौखिक आख्यानों के साथ प्रदर्शित किया जाता था। कला इतिहास की दृष्टि से यह मानना तर्कसंगत है कि उस समय पश्चिम बंगाल के पटुआ और पटचित्र स्क्रॉल या आंध्र प्रदेश की कलमकारी परंपराओं जैसी लोक और आदिवासी चित्रकला भी प्रचलन में थी और रामायण के दृश्य और रामकथा के विविध प्रसंगों के दृश्य उकेरे जा रहे थे।

रामायण के कई संस्करण और रामकथा के प्रसंग, भारतीय जनजातियों जैसे भील, मुंडा, संथाल, गोंड, मीणा, सौरा, कोर्कस, राभा, बोडो-कछारी, खासी, मिज़ोस, मैतेई आदि के बीच लोक-व्याप्त हैं। विषय की संरचना और एकता को बनाए रखते हुए, ये समुदाय ग्रंथों और कलाओं में अपने स्वयं के कथानक और उप-कथानक गढ़ते हैं, और सामाजिक-सांस्कृतिक-भौगोलिक परिदृश्य जोड़ देते हैं, जो हो सकता है कि मूल ग्रन्थ में न हो। प्रत्येक समूह कला के माध्यम से रामायण या रामकथा के अपने संस्करण को प्रस्तुत करता है। मिथिला चित्रकला या मधुबनी चित्रकला का उद्भव मधुबन (शहद के जंगल), बिहार से हुआ है और लोक मान्यता अनुसार, श्रीराम और सीता जी की पहली मुलाकात यहीं हुई और मिथिला के राजा और सीता जी के पिता जनक ने राम-सीता विवाह के लिए महल की दीवारों को बाँस, आम और कमल की झाड़ियों और पक्षियों, मछलियों और साँपों के चित्रों से चित्रित करवाया था। आज भी इस क्षेत्र में विवाह अवसरों पर घरों में मधुबनी चित्रकला परंपरा के चित्र इस भाव से बनाये जाते हैं कि, प्रत्येक दूल्हा राम और उसकी पत्नी सीता है। मिथिला की सभी बेटियां सीता हैं और अवध, जहां के राम हैं, के लोग मिथिलावासियों के भाई हैं।

राजस्थान की लोक चित्रांकन परंपरा में भी रामायण और रामकथा प्रसंगों के विषयों पर अथाह चित्र बने हैं और जिन्हें चित्रकथाओं के माध्यम से गेय रूप में सुनाए जाने की परंपरा रही है। कपड़े से बनी फड़ और लकड़ी से बनी कावड़, राजस्थान की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा की प्रतिनिधि विधाएं हैं। फड़ में कपड़े पर मूल रंगों जैसे हिर्मिच, हिंगलू, पेवडी आदि से किसी कथानक के विविध विषयों को लघु चित्रशैली में चित्रित किया जाता है। शाहपुरा, भीलवाड़ा का जोशी परिवार फड़ बनाने की कला में बहुत माहिर है और इस परिवार ने इस परंपरा को सहेज रहा है। "हालाँकि हम अलग-अलग विषयों पर फड़ बनाते हैं, लेकिन रामदला की फड़ (श्रीराम का समूह) एक महत्वपूर्ण

श्रीराम दरबार की फड़,
चित्रकार- कल्याण जोशी, भीलवाड़ा

फड़ है, जिसमे श्रीराम, श्री कृष्ण और विष्णु जी के प्रसंग चित्रित होते हैं।फड़ चित्र शुरू करने से पहले, हम लोक देवता पाबूजी, या भगवान विष्णु के अवतार देवनारायण जी का ध्यान करते हैं, इन दिनों राम दरबार की फड़ की बाज़ार में बड़ी मांग है।" कल्याण जोशी।

भीलवाडा के कल्याण जोशी पिछले तीस सालों से फड़ बना रहे हैं

श्रीराम पर केंद्रित कावड़ ,
शिल्पी श्री द्वारका प्रसाद सुथार, बस्सी चित्तौड़गढ़

और श्रीरामचरितमानस के प्रसंगों पर केन्द्रित उनकी फड़ बहुत प्रसिद्ध हुई है। यह कला- संस्कार उन्हें अपने पिता पद्मश्री अलंकृत स्व. श्रीलाल जोशी से विरसे में मिले, जिन्होंने लुप्त-प्राय: फड़ चित्रण को सहेजा और संभाला। राजस्थान के भोपा (पुरुष पुजारी) फड़ चित्रों को माध्यम के रूप में इस्तेमाल करके रामायण के प्रसंग गाते हैं (फड़-बांचन), जहां भोपी (पुजारी की पत्नी) सुनाए जाने वाले प्रसंग पर नृत्य करती है, और चूँकि फड़-बांचन मुख्यत: रात में होता है, इसलिए भोपी फड़ के उस खंड पर दीपक से रोशनी डालती है, जिस संदर्भित चित्र की तरफ भोपा इशारा करता है।

"पुरी अजोध्या राजा दशरथ घर सीरी रामचंदर अवतार लियो,
जनकपुरी मा जनक बिराजे, जिन घर सितवा जनम लियो,
महादेवजी रौ धनुष धरियो, उठ सीता नमस्कार कियो..."

इसी प्रकार बस्सी-चित्तौड़गढ़ की कावड़ कला, राजस्थानी लोक कला की मजबूत परंपरा है, जिसमें सुथार या जांगिड ब्राह्मण लकड़ी के कपाटयुक्त कावड़ बनाते है, प्रत्येक कपाट पर रामायण और अन्य विषयों के चित्र उकेरते हैं। "रामायण और रामकथा के प्रसंग हमारे प्रिय और महत्वपूर्ण विषय हैं और कावड़ के अलग-अलग कपाटों पर सम्बंधित चित्र बनाये जाते है और उन पर उस चित्र के बारे में संक्षिप्त रूप से लिखा भी जाता है। कावड़ के ऊपर सूर्य उकेरा जाता है क्यूंकि श्रीराम सूर्यवंशी थे, कावड़ के बीच में तीन मूर्तियां रहती है, जो मुख्यत: श्रीराम, सीता जी और लक्ष्मण जी की होती है।" द्वारिका प्रसाद सुथार, कावड कलाकार, बस्सी-चित्तौड़गढ़ ।

कावड़ को गेय रूप में पढने वाले को कावड़िया भाट, और जो जजमान आमंत्रित करते हैं उनको कावड़ खुलवाने वाले कहा जाता है। जोधपुर के गाँव-हरिसिंह जी की बासनी के कावड़िया भाट नरसीराम और उनके समुदाय ने कावड़ बांचने की परंपरा को सहेज रखा है।

ठाकरी रामायण, महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के पिंगुली गांव में ठाकर जनजाति का रामायण का अपना लोक संस्करण, जिसकी शुरुआत सीता-स्वयंवर एवं अंत राम-रावण युद्ध से होती है। गुजरात के जोगी या भरथरी कलाकार कपड़े और कागज पर मिट्टी से गेहूं की पत्तियों की डंठल से बनी कलम से रामायण या रामकथा के प्रसंगों के चित्र उकेरते हैं, इस कला परंपरा को सहेजने का श्रेय हकु शाह और तेजू बेन को जाता हैं। चित्रित घटनाओं को भजनों के द्वारा भील गायकों द्वारा गेय रूप में प्रस्तुत किया जाता है, इस संदर्भ में गुजराती लोक गायिका स्व. दीवालीबेन भील का योगदान उल्लेखनीय है।

यह सत्य और तथ्य है कि सम्पूर्ण भारत की लोक और जनजातीय कला परंपराओं में श्रीराम प्रमुख विषय हैं, हालाँकि कुछ लोक चित्रों में रामायण या रामकथा के अन्य चरित्र भी मुखरित रूप से प्रस्तुत किये गए हैं ।

"हम गोंड कलाकारों के लिए प्रमुख देवता श्रीराम के भाई लक्ष्मण जी हैं और मान्यतानुसार लक्ष्मण जी शेषनाग के अवतार हैं, और हम गोंड कलाकार नागवंशी है इसलिए नागों के उपासक हैं। गोंडी रामायण में लक्ष्मण जी को समर्पित सात प्रसंग हैं, जिन्हें गोंड कलाकार पौराणिक रूप से चित्रित करते हैं, और अपने गायन प्रवचनों के दौरान उपयोग करते हैं।

पारंपरिक रूप से चित्रों के विषय गोंडी रामायण के प्रसंग होते हैं, और वर्तमान में इनमे समसामयिक तत्वों जैसे पश्चिमी परिधान आदि का समावेश किया जा रहा है" वेंकट रमन सिंह श्याम, पाटनगढ़ जिला डिंडोरी, मध्य प्रदेश। महाराष्ट्र की वरली लोक चित्रांकन परंपरा में कलाकार, अपने कुल-देवता, महादेव जी और गणेश जी को अधिक प्राथमिकता देते हैं, लेकिन एक नवविवाहित जोड़े को अपने मिलन को सामाजिक रूप से स्वीकृति दिलाने के लिए आयोजित समारोह में वर को ;राम राम; कहकर ही रस्म पूरी करने की अनुमति दी जाती है।

वर्तमान में यह लोक चित्रकला परम्पराएँ बाजार और अर्थव्यवस्था के सापेक्ष बदल रही है, जो उन्हें बचाए रखने के लिए जरूरी भी है। उदाहरण के लिए मधुबनी चित्र दीवारों पर न बनकर कैनवास पर आ रहे हैं और फड़ लम्बी न होकर छोटे संस्करण वॉल हैंगिंग्स के रूप में चित्रित हो रही है। कलाकार अब कावड़ का उपयोग पोर्टेबल आर्ट गैलरी के रूप में कर रहे हैं। लेकिन कहीं न कहीं विषय पौराणिक-धार्मिक विशेषकर रामकथा प्रसंग ही है, चाहे समसामयिक मूल्यों के समावेश के साथ ही क्यों नहीं। इन लुप्त-प्राय: लोक चित्रकलाओं को एक नए आर्थिक-सामाजिक नैरेटिव द्वारा पुनर्जीवित किया जा रहा है, जो इन कलाओं का दायरा बढ़ायेगा।

लेखक सुविख्यात कला एवं विरासत विशेषज्ञ हैं!
–अब्दुल लतीफ़ उस्ता

जमीन धंसने से बने गढ्ढे की जयपुर की भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग की टीम करेगी जांच

गत 15 अप्रेल की रात को सहजरासर गांव के नजदीक रोही में खेत में जमीन धंस गई थी

लूणकरनसर, (निसं)। तहसील के ग्राम सहजरासर में अचानक जमीन धंसने से बने गढ्ढे की जांच के लिए अब जयपुर के झालाना डूंगरी से भारतीय भू-सर्वेक्षण की टीम आएगी। सोमवार को जमीन धंसने से बने गढ्ढे के घटना स्थल का उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार व राजस्व तहसीलदार बाबूलाल ने दौरा कर जायजा लिया। मौके पर पुलिस अधिकारियों को सुरक्षा को देखते हुए लोगों की आवाजाही को लेकर सख्ती से निपटने के निर्देश दिए। वहीं धारा 144 तोड़ने वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए गए। प्रशासन ने लोगों को जमीन धंसने से बने गढ्ढे से दूर रहने की हिदायत दी। वहीं सुरक्षा के लिए पुलिस के जवानों का पहरा भी तैनात है। उपखण्ड अधिकारी ने बताया कि मामले की जांच के लिए भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग की टीम के अधिकारियों ने मंगलवार शाम तक पहुंचने की बात कही है तथा जांच होने के बाद ही जमीन धंसने का कारण स्पष्ट हो पाएगा।

- **जमीन धंसने से बने गढ्डे के घटना स्थल का एसडीएम व राजस्व तहसीलदार ने जायजा लिया, मौके पर पुलिस अधिकारियों को सुरक्षा को देखते हुए लोगों की आवाजाही को लेकर सख्ती से निपटने के निर्देश दिए**

जमीन धंसने के एक सप्ताह बाद अब गढ्डे के बढ़ने व गहरा होने जैसी खास हल-चल नजर नहीं आ रही है। जमीन धंसने से आस-पास कई मीटर तक बड़ी-बड़ी दरारें आ चुकी है तथा सड़क भी टूट चुकी है। गौरतलब है कि 15 अप्रेल की रात को ढाणी भोपालाराम से सहजरासर गांव जाने वाली सड़क पर सहजरासर गांव के नजदीक रोही में एक खेत में अचानक जमीन धंस गई थी।

जमीन धंसने से 150 से 200 फीट लम्बा-चौड़ा तथा 70-80 फीट गहरा गड्ढा हो गया। इसके अलावा सड़क समेत आस-पास के इलाके में बड़ी-बड़ी दरारें बन गई। इससे आस-पास के इलाके में कौतूहल की स्थिति बनी है। जमीन धंसने से बने गढ्डे को लेकर खान एवं भू-विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों ने मौके पर पहुंचकर जांच की, लेकिन कोई निष्कर्ष पर बात नहीं पहुंची। वैज्ञानिकों ने जीसीआई के वैज्ञानिकों से जांच का सुझाव दिया था। इसको लेकर उपखण्ड प्रशासन ने भी जिला कलक्टर को लिखा गया था।

कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर निजी सहायक ने आर्म्स लाइसेंस बनाया

एडीएम ने तत्कालीन कलेक्टर के निजी सहायक सहित पांच कार्मिकों के विरुद्ध मामला दर्ज कराया

खैरथल, (निसं)। नवगठित जिला खैरथल तिजारा के अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुरेंद्र सिंह यादव ने सहायक प्रशासनिक अधिकारी नरेंद्र चौधरी सहित पांच लोगों के विरुद्ध खैरथल पुलिस थाने पर कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर आर्म्स अनुज्ञापत्र जनरेट करने का मामला दर्ज कराया है। यह कार्रवाई पूर्व विधायक रामहेत यादव की शिकायत पर विशिष्ट शासन सचिव के आदेश पर गठित जांच समिति की जांच में दोषी पाए जाने पर की गई है।

नवगठित जिला खैरथल तिजारा के अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुरेंद्र सिंह यादव ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि किशनगढ़ बास पूर्व विधायक रामहेत यादव की और से मुख्यमंत्री को शिकायत भेजी गई थी। मुख्यमंत्री को भेजी गई शिकायत पर विशिष्ट शासन सचिव ने गत 11 मार्च को जांच के आदेश किए थे। जांच में सामने आया कि तत्कालीन जिला कलेक्टर के निजी सहायक नरेंद्र चौधरी ने जिला कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर आर्म्स अनुज्ञापत्र जनरेट किया है। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने जांच में सामने आने पर नरेंद्र चौधरी सहायक प्रशासनिक अधिकारी सहित जितेंद्र शर्मा अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी नरेश चंद्र शर्मा कनिष्ठ सहायक सहित पांच के विरुद्ध पुलिस में मामला दर्ज कराया गया है। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया है कि नरेंद्र चौधरी ने तत्कालीन जिला कलेक्टर के निजी सहायक रहते हुए यह अपराधिक कृत्य किया है।

- **यह कार्रवाई पूर्व विधायक रामहेत की शिकायत पर विशिष्ट शासन सचिव के आदेश पर गठित जांच समिति की जांच में दोषी पाए जाने पर की गई**

निजी सहायक नरेंद्र चौधरी ने जिला कलेक्टर के अनुमोदन आदेशों के बिना फर्जकारी करते हुए अनुज्ञा पत्र जनरेट करने में जिला कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर एएलआईएस पोर्टल पर आर्म्स अनुज्ञापत्र को जनरेट किया है। इस कार्य में सहयोगी रहे अन्य चार कार्मिकों के विरुद्ध खैरथल पुलिस ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया है। पुलिस में मामला दर्ज होने के पश्चात कलेक्ट्रेट कार्यालय में कार्मिकों के बीच चर्चा बनी है। मामले की जांच खैरथल थाना अधिकारी दिनेश कुमार कर रहे हैं।

पूर्व विधायक रामहेत यादव ने मुख्यमंत्री को लिखित शिकायत में अवगत कराया कि जिला कलेक्टर के निजि सहायक नरेंद्र चौधरी ने कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार किया तथा पद का दुरुपयोग करते हुए नियमों का उल्लंघन कर आर्म्स अनुज्ञा पत्र जारी किया है। पूर्व विधायक ने आरोप लगाया कि नरेंद्र चौधरी को कांग्रेस सरकार में राजनीतिक दबाव में तत्कालीन रहे जिला कलेक्टर ने निजी सहायक के पद पर लगाया था।

पेयजल समस्या को लेकर प्रदर्शन

रावतभाटा, (निसं)। रावतभाटा क्षेत्र के वार्ड नंबर 12 और 39 में फिर से पेयजल समस्या गहरा गई है। समस्या को लेकर वार्ड की महिलाएं चिलचिलाती धूप में दोपहर दो बजे जलदाय विभाग पहुंची। महिलाओं का कहना हैं कि पिछले कई दिनों से पेयजल समस्या से जूझ रही है। नलों में पीने का पानी तक नसीब नही होता। इधर बढ़ती गर्मी के साथ पानी की आपूर्ति नहीं होने से महिलाओं में रोष है। पानी की समस्या को लेकर महिलाओं ने जलदाय विभाग में ज्ञापन देकर समस्या के समाधान की मांग की। नगर की महिलाओं का कहना है कि रावतभाटा में चंबल नदी का अपार सागर है। ऐसे में हमेशा ही पानी की किल्लत रहती है। जलदाय विभाग के अभियंता अविनाश वर्मा ने बताया कि महिलाओं ने समस्या समाधान का प्रार्थना पत्र दिया है। उक्त क्षेत्र में निरक्षण कर कारणों का पता करेंगे। हम सभी क्षेत्र में बराबर पानी देते हैं। मगर कुछ वार्ड में लोग सप्लाई के दौरान मोटर चला देते है। ऐसे में बिजली विभाग को पत्र देकर सप्लाई के समय बिजली कटौती कराई जाएगी।

राशिफल

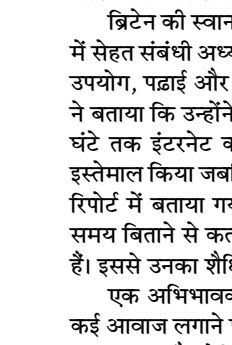

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 25 अप्रेल, 2024

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, विशाखा नक्षत्र रात्रि 2:24 तक, व्यतिपात योग रात्रि 4:53 तक, कौलव करण प्रात: 6:46 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:01 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 2:24 से आरम्भ होगा। बुध मार्गी सांय 6:25 पर होगा। आज व्यतिपात पुण्यं है और आज प्रतिपदा तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:34 तक, चर 10:48 से 12:25 तक, लाभ-अमृत 12:25 से 3:39 तक, शुभ 5:15 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 6:52

मेष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन

परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है।

तुला

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सम्भावित आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।